शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

आत्मनिर्भर भारत की कुंजी 'लोकनीति'

डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे

कभी इस बात पर विचार किया है कि राजनीति में सफल होने के लिए कैकयी, कंस अथवा शकुनी के गुण होना चाहिए। पहले कैकयी को ही देखें तो पाते हैं कि उसने अपने पति दशरथ से तीन वरदान मांगे। उनमें राम को वनवास और भरत को राजगद्दी मुख्य है। कैकयी के सामने पति दशरथ विवश हैं। राम से वियोग की कल्पना मात्र से अशक्त हो गये। दशरथ जी, कैकयी से अनेक बार राम को वनवास न भेजने की विनती करते हैं, लेकिन कैकयी टस से मस नहीं होती। राम से बिछुड़ने की बात से पिता दशरथ की जान पर बन आयी है। उनके सामने काले वस्त्र धारण करके बैठी कैकयी भी इस बात को समझ रही है। कैकयी इस बात से भी अनजान नहीं है कि राम से अलग होते ही दशरथ जी के प्राण पखेरू उड जाएंगे। इसके बाद भी वह अपना निर्णय बदलने को तैयार नहीं है। यह भारतीय स्त्री का पौराणिक दृष्टि से सबसे वीभत्स रूप दिखायी देता है। भले ही पति की मृत्यु हो जाए परंतु पुत्र को राजगद्दी मिलना ही चाहिए। राजनीति का असली चेहरा यही है। वह निर्मम होती है। समय आने पर उसे अपने सगे संबंधियों के प्राण हरण करने में संकोच नहीं होता।

दूसरी ओर राम हैं। एक दिन पहले उनका राज्याभिषेक होने वाला है। दशरथ जी ने उनसे राजा बनने का आग्रह किया है। राम विनम्रतापूर्वक पंचों की राय लेने की सलाह देते हैं। अगले ही दिन राम को वनवास जाने की सूचना मिलती है। एक पल गंवाए बिना राम इसे सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। राम इसका कोई प्रतिरोध नहीं करते। वास्तव में राम लोकनीति के पक्षधर हैं। राम ने राजनीति पर लोकनीति की स्थापना के लिए कैकयी के निर्णय को शिरोधार्य किया। राम ने चौदह साल लोक संग्रह किया। उन्होंने लोकोत्तर प्राणियों से अपना संबंध स्थापित किया। राजनीति निरंतर लोक के विरोध में षड्यंत्र रचती रहती है। पीडित, शोषित लोक में शक्ति का संचार राजनीति से नहीं किया जा सकता। जब लोक संग्रह करने के बाद राम वापस अयोध्या लौटे तब राजनीति के स्थान पर रामनीति अर्थात लोकनीति स्थापित हो चुकी थी, जिसे आज की भाषा में रामराज्य कहा जाता है। राजनीति से रामराज्य की स्थापना करना असंभव है।

ऐसे ही महाभारत काल में कृष्ण लोकनीति के संस्थापक है। कंस, कैकयी का ही दूसरा रूप है। कंस को अपनी मृत्यु का भय है। इसलिए अपने जंवाई और बहन को जेल में डाल दिया। कृष्ण ने गोकुल में इंद्र और कंस की राजनीति के स्थान पर लोकनिति को स्थापना की। इसके बाद कंस पर प्रहार किया। कृष्ण जीवनभर लोक के बीच में रहे और राजनीतिक चालों का उत्तर लोकनीति से देते रहे। आज भगवद्गीता के उपदेश लोक के कंठ का हार बने हुए हैं। शकुनी और दुर्योधन राजनीति ही तो करते रहे। महल में बैठकर लोक के विरोध में नित नया षड्यंत्र और चालें चलते

रहे। मोहग्रस्त धृतराष्ट्र के पास इनके समर्थन करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। उनका ध्यान लोक की तरफ था ही नहीं। कृष्ण निरंतर लोकोन्मुखी रहे। बचपन में इंद्र की राजनीति के बरक्स कृष्ण ने गोकुल की लोकशक्ति को जाग्रत किया।

इंद्र ने कृष्ण को परास्त करने और अपनी पूजा करने के लिए पूरे गोकुल गांव को डुबाने की न सिर्फ योजना की बल्कि उस पर अमल भी किया। तब कृष्ण द्वारा जाग्रत लोकशक्ति ने अपना गोवर्धन स्वयं धारण किया। आज भी लोकशक्ति को जाग्रत करने वालों से राजधानियों में बैठा इंद्र भयभीत रहता है। राजनीति स्वयं तो भयभीत रहती ही है, दूसरों के भय से वह शक्ति हासिल करती है। लोकनीति में भय का कोई स्थान नहीं है। अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के लिए महात्मा गांधी ने इस देश को सोयी हुई लोकशक्ति को जगाया। पुरातन भारतीय संस्कृति के मूल्य अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह को साधू-संन्यासियों की कुटिया से निकालकर आम जनजीवन में दाखिल किया। आधुनिक जमाने में नाथूराम गोडसे राजनीति का दूसरा नाम है, जबकि महात्मा गांधी लोकनीति के रूप में उपस्थित होते हैं। गांधीजी हमेशा लोक में रहे और वहां से शक्ति प्राप्त करते रहे। उन्हें वनवास नहीं दिया गया, बल्कि उन्होंने अपने लिए वैसा मार्ग खुद चुना। अनेक व्यक्तियों को यह भ्रम है कि गांधीजी राजनीतिज्ञ थे। गांधीजी लोकनीतिज्ञ थे। उनकी हर श्वास पीडित और दुखी लोक के लिए समर्पित थी। राजनीति की अंतिम परिणति हिंसा में होती है, जबकि लोकनीति की गंगा सतत प्रवाहित होती है।

इसी प्रकार लोकनायक जयप्रकाश नारायण मूल रूप से राजनीति के पक्षधर रहे। उनके ठीक उलट विनोबाजी लोकनीति के जरिए समाज परिवर्तन के हिमायती थे। विनोबाजी ने जयप्रकाश नारायण को लोकनीति की ओर मोड़ने के बहुतेरे प्रयास किए, परंतु राजनीति ने ऐसा नहीं होने दिया। राजनीति के शमन के लिए विनोबा जी तेरह वर्षों तक लगातार लोक के बीच में रहकर लोगों से जमीन मांगते रहे। लोगों ने उन्हें 45 लाख एकड जमीन दान में दी। यह महापराक्रम राजनीति से होना असंभव था। विनोबा जिस समाज रचना के लिए लोक में गये थे, जयप्रकाश नारायण की राजनीति ने उसे छीन लिया। राजनीति हमेशा लोकनीति का लबादा ओढ़कर सामने आती है। उसका मोह इतना जबर्दस्त होता है कि वह विद्वानों की बुध्दि हर लेती है।

भारत में संतों ने लोकसंग्रह किया है। राजनीतिज्ञ हमेशा संख्या को महत्व देता है। रावण के युग से लेकर आज तक संख्या के बल पर ही समाज परिवर्तन के दावे किये जाते रहे हैं।

राजनीति हमेशा लोकनीति के विरोध में खड़ी रहती है। राजनीति दिन रात लोक के खिलाफ षडयंत्र करती है। लोकनीति के रास्ते पर चलने वाले को सत्ता प्राप्त होती है, इसमें संदेह नहीं है, परंतु सत्ता से लोक का कल्याण होता है, यह बहुत बड़ा भ्रम है। इस भ्रम का निरसन जितनी जल्दी होगा, देश और दुनिया उतनी शीघ्रता से मनुष्यता की अगली पायदान पर कदम रखेगी।